JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

काका कालेलकर और राष्ट्रभाषा हिन्दी

डॉ. निलेश कापडिया
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय (IASE),
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

काका साहब का जन्म महाराष्ट्र के सतारा शहर में दिनांक 01/12/1885 को हुआ था। ता.24-09-1939 में दिये गये एक भाषण में गांधीजी कहते है, "काका साहब इस उम्रमें भी राष्ट्रभाषा के लिए कितना परीश्रम कर रहे है? किन्तु अब उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। मैं उनको बार-बार समझा रहा हूँ कि वे एक जगह बैठकर आराम से राष्ट्रभाषा की जो कुछ सेवा कर सकें करे। परन्तु वे अभी तक नहीं मान रहें"। इसीलिए काका कालेलकर को राष्ट्रभाषा हिंदी के सजग प्रहरी कहा गया है। काका साहब 1928 से 1935 तक गूजरात विद्यापीठ के आचार्य एवं कुलनायक रहे तथा शिक्षाशास्त्री के रूप में कीर्ति प्राप्त की। काका साहब सात भाषाओं के जानकार थे। उन्होंने अंग्रीजी भाषा के हजारों शब्दों के पारिभाषिक शब्द भारतीय भाषाओं में बनाये है। भाषा शास्त्री काका साहब को स्नेहपूर्वक 'शब्द शिल्पी' कहते थे। काका साहब की शब्द रचना शक्ति का विद्यापीठ की परीभाषा में पहली बार परिचय मिला। कुमार-मंदिर, विद्या मंदिर, विनीत, स्नातक, समिति, नियामक सभा, निधिप मंडल, अन्वेषक, ध्यानमंत्र आदि शब्द जो हमें चिरपरिचित लगते है, सभी काका साहब के बनाये हुए शब्द है। काका कालेलकरजी का पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर था। पिताजी अंग्रेज सरकार में शासकीय सेवा में कार्यरत थे इस कारण उनका स्थानांतरण अलग-अलग स्थानों पर होता था। अत: काका साहब की यात्राएं बाल्यकाल से ही आरंभ हो गई थी। उनका मन बचपन से ही प्रकृति की ओर आकर्षित था। नदी, नाले, तालाब, पहाड, बगीचे आदि देखने में उनको आनंद मिलता था। बडौदा स्थित 'गंगनाथ भारतीय सर्व विद्यालय' नामक संस्था में आचार्य के पद पर रहते हुए 'काका' नाम से पहचाने जाने लगे।

हिन्दी भाषा में यात्रा वृतांत विकसित करने में काका साहब का उल्लेखनीय योगदान है। वे प्रतिभाशाली साहित्यकार एवं शिक्षाशास्त्री थे। उनकी लेखनी और वाणी ने अनेक लोगों को प्रेरणा प्रदान की है। वे लगातार चौंसठ वर्ष तक लेखन करते रहे और राष्ट्रभाषा को समृद्ध करने में अपना योगदान देते रहे। उनका जीवन सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

राष्ट्रभाषा की आवश्यकता क्युं है? उसका उत्तर देते हुए काकासाहब कहते है, "हिन्दुस्तान जैसे विशाल राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति होने के लिए भिन्न भिन्न गुण और स्वभाववाली प्रान्तीय जातियों की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही भारतीय संस्कृति के सर्वदेशीय विकास के लिए भिन्न भिन्न भाषाओं की आवश्यकता है। किन्तु जैसे भिन्न भिन्न इन्द्रियों में संचार करने वाला मन तो एक ही है, जिसके द्वारा संम्पूर्ण शरीर में एकरूपता और एकप्राण का संचार होता है, उसी तरह आज हिन्दुस्तान में एक राष्ट्रीय भाषा की अत्यन्त आवश्यकता है"।

राष्ट्रभाषा हिन्दी ही क्युं होनी चाहिए? उसके बारे में काकासाहबने निम्नांकित मुख्य बिंदुओ पर अपनी ठोस बाते रखी है।

- अपनी संस्कृति के लिए, अपने पूर्वजों के नाम के लिए और अपने वंशजों के ऐहिक और पारलौकिक कल्याण के लिये हम अपनी देशभाषा-मातृभाषा को छोड नहीं सकते।
- हमारे राष्ट्र का प्राण हमारी राष्ट्रीय भाषा तो हिन्दु और मुसलमानों में आज सैकडों वर्षों से अभेदभाव रखनेवाली हिन्दी भाषा ही होनी चाहिए।
- अंग्रेजी भाषा को राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर बिठाना हमारी संस्कृति को तिलांजलि देने समान है। सुशिक्षित और अशिक्षित की भाषाओं में इतना भेद हुआ तो राष्ट्र का प्राण ही चला जायेगा।
- अंग्रेजी राज्यकर्ताओं की भाषा है इसीलिए हमें उसे अपनी राष्ट्रभाषा बना लेना चाहिये, ऐसा कहनेवाला भी एक दल सुशिक्षितों में है। परंतु शिक्षित दल तो जानता है की राज्य प्रजा के हित के लिए है और राजा प्रजा हित का सेवक है।
- राजा को अपने कर्तव्य का भली भाँती पालन करना है तो उसे प्रजा की संस्कृति के साथ एक रूप होकर प्रजा की भाषा में ही बोलना चाहिये, प्रजा की भाषा में विचार करना चाहियें, और प्रजा की भाषा में ही स्वप्न देखने चाहियें।

- सारे हिन्दुस्तान में ईमानदारी से द्वारपाल की नौकरी करनेवाला भी सिध्ध करता है की हिन्दी सार्वत्रिक भाषा हो सकती है।
- हिन्दुस्तान के अनेक पंथो के साधुओं ने भी इस प्रश्न का निराकरण किया है। साधु चाहे बंगाली हो, चाहे मद्रासी पर वह हिन्दी में ही बोलेगा।
- कैलास से रामेश्वर तक और द्वारका से कामाक्षी तक हिन्दी से भली भाँति काम चल सकता है।
- कई लोग कहते है की राष्ट्रभाषा बनने के लिए हिन्दी के पास प्रर्याप्त वाड्मय नहीं है। लेकिन ये भ्रमित करनेवाली बाते है।
- प्राकृतिक वर्णन करनेवाली कवितायें लीजिये, श्रृंगार, वीर, करूण, भक्ति या और कोई रस लीजीये, उन सभी में संसार की किसी भी भाषा से हिन्दी पीछे नहीं पड सकती।
- जिस भाषा में तुलसीदासजी ने अपनी रामायण लिखी, जिस भाषा में कबीरदासजी ने भक्तिमार्ग का प्रतिपादन किया, जिस भाषामें गोपियों के साथ श्रीकृष्ण का प्रेम प्रगट हुआ वो भाषा का वाड्मय अद्भूत है।
- गुजरात की ओर से मीराबाई, अखा, दयाराम और दलपतराम आदि ने भी हिन्दी को अपना कर चुकाया है।
- गुजराती, दक्षिणी और बंगाली लोगों ने हिन्दी को अपनाकर उसकी सेवा की है।
- स्वामी दयानन्दजी ने हिन्दी को आर्य-भाषा नाम देकर पंजाब में भी उसकी प्रतिष्ठा की है।
- जिस तरह नदीयाँ पर्वत से धो धो शब्द कर बहती हुई अपनी गोद के बच्चों को दूध पिलाती हुई अपना जल महासागर को अर्पण करती है, उसी तरह आज किसी भी हिन्दुस्तानी भाषा का उत्तम ग्रंथ हो हिन्दी में उसका भाषान्तर तत्काल हो जाता है।
- सबसे पहले हमारे अध्ययन-क्रमों में हिन्दी का प्रवेश होना चाहिये। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षण में हिन्दी एक आवश्यक विषय होना चाहिये।

गांधी जी के आग्रह से काका साहब ने दक्षिण भारत के तमिलनाडु, कर्णाटक, केरल और आंध्र में हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार का कार्य बखूबी कीया था। वर्धा में गांधी जी ने हिन्दी प्रचार के लिए सिंध, गुजरात, विदर्भ, महाराष्ट्र, बंगाल, उडीसा, आसाम इन अहिन्दी प्रदेशो के लिए समिति बनाई थी। इसके अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र

प्रसाद तथा उपाध्यक्ष काका साहब थे। समिति के उपाध्यक्ष के नाते वे सारे भारत में हिन्दी के प्रचार के लिए निरंतर घुमते रहे।

राष्ट्रभाषा प्रचार के साथ-साथ काका साहब ने नागरी लिपि सुधार का कार्य भी कीया। 1935 में इन्दौर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उन्हो नें नागरी लिपि विषयक कुछ सुझाव रखें जो बाद में मान्य हुए थे। काका साहब ने हिन्दी के लिए एक शीघ्रलिपि तैयार की थी। हिन्दी में तार भेजने के लिए एक विद्युत लिपि भी तैयार की थी। टाइप राइटर के लिए की-बोर्ड और शब्द फलक तैयार कीया था।

दिनांक 18-02-1946 में काकासाहबने गूजरात विद्यापीठ के महामात्र को खत लिखकर कहा था की, गूजरात विद्यापीठ के समान राष्ट्र निर्माण के रचनात्मक काम का बीडा उठानेवाली प्रौढ संस्था इस कामको अपने ही हाथोंमें ले ले। इसलिए हमारी प्रार्थना है कि हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के साथ संबंध रहकर चलनेवाली उस सारे काम को गूजरात विद्यापीठ अपने हाथमें ले और उसे विधिवत अपनायें। निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, पत्र साहित्य जैसी सब विधाओं में काका साहबने अपना स्थान दर्ज कीया था। ओर इन सब में उनका यात्रा वृतांत 'हिमालय की यात्रा' हम सब को घर बैठे ही हिमालय की गोद में ले जाता है। आजादी के आंदोलन में सक्रिय भूमिका, नवजीवन संभालना, विद्यापीठ की जिम्मेदारी के बावजुद काका साहबने हिन्दी की आजीवन सेवा की है। काका साहब के जीवन का मुख्य उद्देश्य साहित्य के द्वारा, संभाषणों के द्वारा, पत्र व्यवहार के द्वारा, प्रत्यक्ष संपर्क द्वारा संस्कृति, भाषा, धर्म, अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय करना था। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए वे जीवनपर्यंत प्रयासरत रहे।

संदर्भ

कालेलकर. (1927). *जीवन साहित्य.* सस्ता साहित्य प्रकाशक मंडल.

गांधीजी. (1947). *राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी.* नवजीवन प्रकाशन मंदीर.

व्यास, प्री. (2020). *हिन्दी यात्रा वृतांत की परम्परा और आचार्य काका कालेलकर* [अप्रकाशित पी.एच्.डी. शोधनिबंध]. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय. http://hdl.handle.net/10603/389356